UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 37 प्रमुख खिलाड़ी (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

मेजर ध्यानचन्द-हॉकी में भारत को पहचान दिलाने में मेजर ध्यानचन्द का विशेष योगदान है। इनकी बचपन से ही खेलों में रुचि थी। सन् 1922 ई० में ये सेना में भर्ती हुए। चार वर्ष बाद भारतीय हॉकी टीम के साथ न्यूजीलैंड जाकर इन्होंने अपने खेल से सबको प्रभावित किया। सन् 1928 ई० ये ओलम्पिक खेलों में भाग लेने एम्सटर्डम पहुँचे। वहाँ सब टीमों को हराकर भारत ने पहला स्वर्ण पदक जीता। यह एक गौरव का विषय था। । सन् 1936 ई० में बलिन ओलम्पिक में मेजर ध्यानचन्द के नेतृत्व में भारतीय टीम ने और भी ज्यादा शानदार प्रदर्शन किया। इस खेल को हिटलर ने भी देखा था। मेजर ध्यानचन्द भारतवर्ष, भारतीय फौज और हॉकी की सेवा में आजीवन समर्पित रहे। मेजर ध्यानचन्द के जन्मदिन को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। संन् 1956 ई० में इन्हें 'पद्मभूषण' उपाधि से सम्मानित किया गया। 3 दिसम्बर, सन् 1979 को इनका निधन हो गया। इनको नाम खेल जगत् में सदैव अमर रहेगा। इनकी स्मृति में झाँसी स्थित एक स्टेडियम का नाम 'मेजर ध्यानचन्द स्टेडियम' रखा गया। । सुनील गावस्कर- सुनील मनोहर गावस्कर का जन्म सन् 1949 ई० में मुम्बई में हुआ। इनकी शिक्षा सेंट जेवियर्स हाईस्कूल एवं मुम्बई विश्वविद्यालय में हुई। इनके टेस्ट जीवन की शुरुआत
सन् 1971 में वेस्टइंडीज दौरे से हुई।

सुनील गावस्कर:
ने एक कैलेंडर वर्ष में 1000 रन चार बार बनाए। सुनील गावस्कर ने सन् 1983 ई० में वेस्टइंडीज के विरुद्ध बिना आउट हुए 239 रन बनाए, यह उनके टेस्ट जीवन का सबसे बड़ी पारी थी।
इन्होंने टेस्ट मैचों में 125 टेस्ट मैच, 214 पारियों में खेले और 10122 रन बनाए। इनमें 34 शतक और 45 अर्द्धशतक हैं। इनका रन औसत 51.12 रन था। इन्होंने 108 कैच भी लिये।।
सुनील गावस्कर ने अपने खेल जीवन में भारतीय टीम का नेतृत्व कप्तान के रूप में किया। ये एक खिलाड़ी ही नहीं वरन् एक कुशल लेखक भी हैं। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सनिडेज़' है। एक महान बल्लेबाज के रूप में ये जीते जी किंवदन्ती बन चुके हैं। इन्हें 'लिटिल-मास्टर' के नाम से भी जाना जाता है।

https://www.evidyarthi.in/